वीतरागतास्वरूप उत्तम संयम धर्म

मंगलाचरण—

इन्द्रिय के भोग मधुर विष सम, लावण्यमयी कंचन काया।
यह सब कुछ जड की क्रीडा है, मैं अब तक जान नहीपाया।।
मैं भूल स्वयं निज वैभव को, पर ममता में अटकाया हूँ।
अब निर्मल सम्यक नीर लिये, मिथ्यामल धोने आया हूँ।।

उत्तम संयम की परिभाषा बतायें?

संयम के प्रकार बतायें?

संयम मार्गणा के अनुसार भेद बतायें?

▪निश्चय से इन्द्रिय निरोधः संयमः/ संयमनं संयमः/ अथवा व्रतसमितिकषायदण्डेन्द्रियाणां धारणानुपालननिग्रहत्यागजयाः संयमः। तथा सो संजमो जो सम्माविणाभावी ण अण्णो।

▪संयम पालन के प्रकार–इन्द्रिय संयम, (5इन्द्रिय और मन) प्राणी संयम (5स्थावर और त्रस)

▪सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसांपराय, यथाख्यात, संयमासंयम, असंयम। (गो.जी.का.संयम मार्गणा 465–481)

संयम की उत्पति, स्थिति,वृद्धि और फलागम

मनुष्य भव में संयम की प्रमुखता–

विद्या वृतस्य संभूति स्थिति वृद्धि फलोदयाः।
न सन्त्यसति सम्यक्त्वे बीजाभावे तरोरिव।। रकश्रा.32

▪आदिनाथ के दीक्षा के समय पालकी उठाने में देवों को नही मनुष्यों को अधिकार क्योंकि संयम की पूर्णता मनुष्य भव में ही होती है।

▪मनुष्य भव की सार्थकता संयम धारण करने में है।

बहु पुण्य संयोग मिला नर तन, जिनश्रुतजिनदेव चरण दर्शन।
हो सम्यग्दर्शन प्राप्त मुझे , तो सफल बने मानव जीवन।।
पंचपरमेष्ठी पूजन जयमाला 6

▪यह मानुष पर्याय सुकुल,सुनिवौ जिनवाणी।
इह विधि गये न मिले,सुमणि ज्यौं उदधि समानी।।
छह.4/6

संयम का स्वरूप बतायें?

- अणुव्रत का धारी मनुष्य संयमी है बाहर की कैसी भी प्रतिकूलता हो।
- वास्तविक संयम आत्मा में रमण करना है।
- अंतरंग से बाहर की व्याप्ति– उदा. घडे में पानी हो तो बाहर गीला हो जाता है।
- छहकाय के जीवों का घात न हो जाये,सतर्क हैं मगर शुद्धभावों का प्रतिसमय घात हो रहा है खबर नहीं

संयम का स्वरूप बतायें?

- संयम धारियों की अवस्था–

ज्ञान कला जिनके घट जागी,
ते जगमाहीं सहज बैरागी।
ग्यानी मगन विषै सुखमाहिं,
यह विपरीत संभवै नाहीं।।

- आदिनाथ की पालकी उठाने एवं संयमी मनुष्य भव पाने के लिये देव भी तरसते हैं।
- उपयोग को पर पदार्थों से समेट कर निज में लीन होना ही संयम है।
- संयम में दृढता– सेठ सुदर्शन , रामचन्द्र

संयम का स्वरूप बतायें?

- विषयों के लोभी होकर संयम को बिगाड रहे हैं जैसे कौऐ को भगानें में चिंतामणि फेंक देना, ईधन के लिये कल्पवृक्षों को जलाना।
- बाह्य त्रस स्थावर की हिंसा तथा इन्द्रिय मन के विषयों में प्रवृति उसको अविरति जानता है, हिंसा में प्रमाद परिणति मूल है और विषयसेवन में अभिलाषा मूल है उसका अवलोकन नही करता।
- यदि बाह्य हिंसा का त्याग एवं इन्द्रियों के विषयों की प्रवृति नही होने का ही संयम है तो फिर देवगति में संयम होना चाहिये।

संयम में इन्द्रियां बाधक कैसे है?

- इन्द्रिय,मन आत्मज्ञान में बाधक है इन पर विजय प्राप्त करना,उदा. सर्वजीत का,
- इन्द्रियां संसारी विषयों में उलझाने में निमित्त होने से संयम में बाधक हैं साधक नही–भैंसे और पाडा
- इन्द्रिय के भोग छोडने में नही जोडने में लगे हुये हैं। उदा. पेट के नाम पर पेटी भर रहे हैं।
- आत्मारूपी टंकी से पांचों इन्द्रियरूपी नलों से ज्ञानरूपी पानी बह रहा है।

संयम में इन्द्रियां बाधक कैसे है?

- मनुष्य का पेट भर जाता है पर मन नही भरता है।
- दिनरात भक्ष्य अभक्ष्य जाने बिना खाने वाले तिर्यंच से भी गये बीते है,पक्षी रात्रि में नही खाते।
- जैसे अग्नि अतृप्त स्वभावी है वैसे ही इन्द्रिय भी अतृप्त स्वभावी है।
- इन्द्रियां ठग है जो आत्मा को ठग रही हैं, जैसे 4 धूर्तो द्वारा ब्राह्मण की गाय ठग ली गयी।

संसार के विषयों में सुख क्यों नही है?

- विषयों के लोलुपी को आत्मा की गंध नही आती, उदा. कहारिन, मालिन का एवंनमक और शक्कर चीटीं।
- विषयों के सुख से हानि–उदा. राजा की शैया पर नौकर सो गया बाद में पिटा।
- पदार्थो में सुख मानना कुत्ते का हड्डी चूसने के समान है।
- ब्रह्मा ने उल्लू, कुत्ता, गधा, आदमी बनाये आदमी को अन्य की 20–20 आयु दी 40 वर्ष के बाद उल्लू, कुत्ता, गधा जैसी दशा होती है।

इन्द्रियों के लोभियों की दशा कैसी होती है?

इन्द्रियों की सार्थकता किसमें है?

▪इन्द्रियो में रत जीवों की दशा–

अली मातंग मृग सलभ मीन,
विषय इक–इक में मरते हैं।
नतीजा क्या न पावैं
वे विषय पांचों जो करते हैं।।

▪इन्दियों की सार्थकता किस में है–

पावन मेरे नयन भये तुम दरसतैं।.....
एक भव सुखकार ही।

गृहस्थ के 6 आवश्यक कर्तव्य–

देव पूजा गुरूपास्ति, स्वाध्याय संयमः तपः।
दानं चेति गृहस्थानां षट कर्माणि दिने दिने।

संसार के विषयों में सुख नही?

▪संसार के विषयों में सुख नही–

जो संसार विषै सुख हो तो तीर्थंकर क्योंत्यागैं।
काहे को शिव साधन करते, संयम सौं अनुरागै।

▪जो विषयासंत तजी मूढ नाहि लिपटात।
ज्यों नर डारे वमन कर श्वान स्वाद सो खात।

▪आत्मा रूपी रत्न को मोह,राग,द्वेष, इन्द्रिय के चोर लूट रहे हैं।

- जैसे हलाहल जहर से एक बार ही मरण होता है, वैसे ही विषयविष के सेवन से कितने भवों में जन्म मरण होता है इसकी खबर नही है।
- जैसे सूर्य की किरणें तालाब को सुखा देती हैं। वैसे ही संयम से रागद्वेष विषय कषायें नष्ट हो जाती हैं।
- जैसे व्यापारी धान का सार चावल का व्यापार करता है धानके भूसे का नही इसकी कोई कीमत नही है वैसे ही आत्मा के बिना, संयम के बिना व्रत, जप,तप,पूजा क्रियाकाण्ड की कोई कीमत नही।
- जैसे सोने का पारखी शुद्ध सोने को ही खरीदता है खोटे सोने को नही वैसे ही तत्वज्ञानी ज्ञायक की ही बात सुनता है। विषय कषाय की बात नही सुनना चाहता।

संसार के विषयों में सुख नही?

संसार में सुख नही मिला–

भव वन में घूम चुका,
कण कण को जी भर भर देखा।
मृगसम मृगतृष्णा के पीछे ,
मुझको न मिली सुख की रेखा।।

तीन लोक की संपदा भी अनाकुल सुख नही देती–

तीन लोक की संपदा, इन्द्र सरीखे भोग।
काग बीट सम गिनत हैं सम्यग्दृष्टि लोग।।

दशलक्षण पूजा का छंद–

काय छहों प्रतिपाल, पंचेन्द्रिय मन वश करो।
संजम रतन संभाल, विषय चोर बहु फिरत हैं।।
उत्तम संयम गहु मन मेरे, भव भव के भाजैं अघ तेरे।
सुरग नरक पशुगति में नाहीं, आलस हरन करन सुख ठाहीं।
ठाहीं पृथी जल आग मारूत, रूख त्रस करूना धरो।
सपरसन रसना घ्रान नैना, कान मन सब वश करो।।
जिस बिना नहिं जिनराज सीझे तू रूल्यो जग कीच में।
इक घरी मत विसरो करो नित, आव जम मुखबीच में।।

पूजन के छंद का अर्थ–छह काय के जीवों की रक्षा करना और पांच इन्द्रियों और मन को वश में करना उत्तम संयम धर्म है। संयम रूपी रत्न को संभालकर रखना चाहिए क्योंकि विषयवासना रूपी बहुत चोर घूम रहे हैं। उत्तम संयम धर्म को हे मन धारण करो, इसे धारण करने से अनेक भवों के पाप नष्ट हो जाते हैं। यह संयम स्वर्ग, नरक और पशु (तिर्यंच)गति में नही है। यह संयम आलस का हरण करने वाला और सुख को करने वाला है। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति ये स्थावर और त्रस इन छह काय के जीवों पर दयाभाव धारण कर स्पर्शन, रसना, घ्रान, चक्षु, कान और मन को वश करना संयम धर्म है। इस संयम के बिना तीर्थंकर भी मोक्ष को प्राप्त नही हुए और जिसके नही धारण करने से ही यह आत्मा संसार रूपी कीचड में फंसा रहता है। हमें इस संयम को एक क्षण को भी नही भूलना चाहिए हम जम अर्थात् मृत्यु के मुख में जा रहे है।।

(6).उत्तम संयमः–

संयमनं संयमः अथवा व्रत समिति कषायदण्डेन्द्रियाणो धारणानु पालन निग्रह त्यागजयाः संयमः !! अर्थात् संयमन को संयम कहते है संयमन अर्थात् उपयोग को परपदार्थो से समेट कर आत्मसम्मुख करना अपने में सीमित करना ,अपने में लगाना ! उपयोग की स्वसन्मुखता ,स्वालीनता ही निश्चय संयम है अथवा पांच व्रतों का धारण करना ,पांच समितियों का पालन करना, कोधादि कषायों का निग्रह करना मन,वचन,काय रूप तीन दण्डों का त्याग करना और पांच इन्दियों के विषयों को जीतना व्यवहार संयम है! '' सो संयमों जो सम्माविणाभावेण अण्णो '' अर्थात् संयम वही है जो सम्यक्त्व का अविनाभावी हो अन्य नहीं ! संयमः द्विविधा –प्राणीसंयमोन्द्रियश्चेति !

(1) प्राणी संयम– छह काय के जीवों के घात एवं घात के भावों के त्याग को प्राणी संयम कहते है !

(2) इन्द्रिय संयम– पंचेन्द्रियों तथा मन के विषयों के त्याग को कहते है ! संयम एक बहुमूल्य रत्न है इसको लूटने के लिए पंचेन्द्रियों के विषय कषाय रूपी चोर निरन्तर चारों और चक्कर लगा रहे है अर्थात् ''संयम रतन सम्भाल, विषय चोर बहु फिरत है '' मनुष्य भव की सार्थकता संयम धारण करने में है आत्म रमणता ही निश्चयसंयम है! मनुष्य गति के अलावा किसी भी गति में संयम की पूर्णता नही होती है ! देव भी इस संयम के लिए तरसते है ,आदिनाथ के वैराग्य के समय देव और मनुष्यों में वाक् युद्ध होता है देव कहते है कि हे! मनुष्यों मेरा सारा वैभव ले लो एक पल के लिए अपना भव मुझे दे दो ! अन्त में आदिनाथ स्वयं समाधान करते है कि जिसमें संयम की धारणा एवं पूर्णता करने सामर्थ है वहीं इस पालकी को उठा सकता है ! संयम की पूर्णता होने पर भव भव के पाप नष्ट हो जाते है ! यथा–

उत्तम संयम गहु मन मेरे ..... आलस हरन करन सुख ठाहीं !!

प्राणी संयम में त्रस और स्थावर जीवों के घात के भावों का त्याग आता है,लेकिन वर्तमान में यह प्रमादी व्यक्ति प्रमाद और कषाय के योग से द्रव्य अथवा भाव हिंसा तो करता ही है तथा अपनी इन्द्रियों और मन को भी संयमित नही कर पा रहा है ! अगर इस षिषय कषाय में सुख होता तो तींर्थंकर इसको क्यों त्यागते !

''जो संसार विषे सुख हो तो तीर्थंकर क्यों त्यागें !
काहे को शिव साधन करते संयम सों अनुरागें !! ''

वीतरागता उत्तम संयम धर्म – पं.कैलाश चन्द्र जैन शास्त्री

जय जिनेंद्र

पं.कैलाश चन्द्र जैन शास्त्री
जैनदर्शनाचार्य,से.नि. सहा.निदेशक
14/214 मुक्ताप्रसाद नगर
बीकानेर राज.9460674306